

**« Doués pour servir » (Ésaïe 42.1-4 ; Actes 1.8-11)**

Résumé : Dieu nous a doués de son Esprit-Saint, de dons, de talents, de ressources pour que notre service soit glorieux.

**1. Serviteurs glorieux**

- Satan aussi croit être maître de sa destinée

---

---

---

---

---

---

---

---

- Serviteurs glorieux

---

---

---

---

---

---

---

---

**2. Doués de l'Esprit de Christ**

- Doués du même Esprit qui était sur Christ

---

---

---

---

---

---

---

---

- Doués pour la mission de Christ

---

---

---

---

---

---

---

---

- Soyez remplis de l'Esprit

---

---

---

---

---

---

---

---

**3. Doués de dons, de talents, de ressources, de circonstances**

- Dons spirituels et/ou talents

---

---

---

---

---

---

---

---

- Ressources et circonstances

---

---

---

---

---

---

---

---